

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे

॥ पञ्चाशः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ पञ्चाशः सर्गः ॥

रारणकर्तृकः प्रहस्तद्वारको हनुमन्तुं प्रति लङ्कायामागमनप्रयोजनस्य
प्रश्नः, हनुमता रामदूतत्वेनात्नः परिचयदानम्
तमुद्गीक्ष्य महाबालः पिङ्गाक्षं पुरतः स्थितम्।
रोषेण महताहंरिष्टो रारणो लोकरारणः ॥ 5.50.1 ॥

शङ्काहतात्मा दधौ स कपीन्द्रं तेजसा ब्रूतम्।
किमेष भगवान् नन्दी भवेत् साक्षादिहागतः ॥ 5.50.2 ॥

येन शप्तोहस्मि कैलासे मया प्रहसिते पुरा।
सोहयं रानरमूर्तिः स्यात्किंस्त्रिद् बाणोहपि रासुरः ॥ 5.50.3 ॥

स राजा रोषताम्राक्षः प्रहस्तं मन्त्रिसुतम्।
कालयुक्तमुराचेदं रचो रिपुलमर्थरत् ॥ 5.50.4 ॥

दुरात्मा पृथ्यतामेष कुतः किं रास्य कारणम्।
रनभङ्गे च कोहस्यार्थो राक्षसानां च तर्जने ॥ 5.50.5 ॥

मंपुरीमप्रधृष्यां रै गमने किं प्रयोजनम्।
आयोधने रा किं कार्यं पृथ्यतामेष दुर्मतिः ॥ 5.50.6 ॥

रारणस्य रचः श्रुत्वा प्रहस्तो राक्यमब्रवीत्।
समाश्रंसिहि भद्रं ते न भीः कार्यां वरया कपे ॥ 5.50.7 ॥

यदि तारत् वरमिन्द्रेण प्रेषितो रारणालयम्।
तद्भुमाख्याहि मा ते भूद् भयं रानर मोक्ष्यसे ॥ 5.50.8 ॥

যদি রৈশ্রবণস্য ৎরং যমস্য বরুণস্য চ।
চারুরূপমিদং কৃৎরা প্ররিষ্টো নঃ পুরীমিমাম্ ॥ 5.50.9 ॥

রিষুনা প্রেষিতো রাপি দূতো বিজয়কাজ্জিফ্ণা।
নহি তে বানরং তেজো রূপমাত্রং তু বানরম্ ॥ 5.50.10 ॥

তত্ত্বতঃ কথযস্মাদ্য ততো বানর মোক্ষ্যসে।
অনৃতং বদতশ্চাপি দুর্লভং তব জীরিতম্ ॥ 5.50.11 ॥

অথরা যন্নিমিত্তস্তে প্রবেশো বারণালযে।
এবমুক্তো হরিরবস্তদা বক্ষোগণেশ্বরম্ ॥ 5.50.12 ॥

অব্ররীনাশ্মি শক্রস্য যমস্য বরুণস্য চ।
ধনদেন ন মে সখ্যং রিষুনা নাশ্মি চোদিতঃ ॥ 5.50.13 ॥

জাতিরের মম ৎরেষা বানরোহহমিহাগতঃ।
দর্শনে বাক্ষসেন্দ্রস্য তদিদং দুর্লভং মযা ॥ 5.50.14 ॥

বনং বাক্ষসরাজস্য দর্শনার্থং বিনাশিতম্।
ততস্তে বাক্ষসাঃ প্রাপ্তা বলিনো যুদ্ধকাজ্জিফ্ণঃ ॥ 5.50.15 ॥

বক্ষণার্থং তু দেহস্য প্রতियুদ্ধা মযা বণে।
অস্ত্রপাশৈর্ন শক্যোহহং বদ্ধুং দেবাসুরৈরপি ॥ 5.50.16 ॥

পিতামহাদেষ বরো মমাপি হি সমাগতঃ।
বাজানং দ্রষ্টুকামেন মযাস্ত্রমনুর্তিতম্ ॥ 5.50.17 ॥

বিমুক্তোহপ্যহমস্ত্রেণ বাক্ষসৈস্ত্বভিরেদিতঃ।
কেনচিদ্ বাক্ষসকার্যেণ আগতোহশ্মি তবান্তিকম্ ॥ 5.50.18 ॥

দূতোহহমিতি বিজ্ঞায় বাক্ষসস্যামিতৌজসঃ।
শ্রযতামের বচনং মম পথ্যমিদং প্রভো ॥ 5.50.19 ॥

॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे पञ्चाशः सर्गः ॥